लख चोरासी का आणा जाणा, पल भर में दुःख हर लेग्या.....

(एक भगत के विशेष आग्रह पर)

सतगुरु के शरणे सेती म्हारा जनम मरण का भय मिटग्या |
लख चोरासी का आणा जाणा, पल भर में दुःख हर लेग्या || टेर ||

पांच, पच्चीसों, चोर मारके, ठग नगरी सारी तजग्या |
छोड़ दिया नेम, आचार यज्ञ तप, काल बली का भय मिटग्या || १ ||

कागा से गुरु हंसा करग्या, पत्थर से पारस करग्या |
माणक मोती सारा तज के, बड़े अनमोल हीरा बनग्या || २ ||

त्रिवेणी में न्हाय धोय कर, कागा से हंसा बणग्या |
बंकनाल की घाटी चढ़के, अमरलोक में पग धरग्या || ३ ||

अमृतंनाथ जी दया करो दयाला, नैनं का लटका करग्या |
दुर्गा शंकर दास गुरा का, चरणा का चाकर बणग्या || ४ ||

जय श्री नाथजी की.....